बोधिसत्व / शिव का गोत्र क्या है?

शिव का गोत्र क्या है?
यह पूछने पर मिलता है उत्तर कि
स्वयं शिव का कोई गोत्र नहीं!

शिव का वर्ण क्या है?
यह पूछने पर मिलता है उत्तर कि
स्वयं शिव का कोई वर्ण नहीं!

शिव का कुल क्या है?
यह पूछने पर मिलता है उत्तर कि
स्वयं शिव का कोई कुल नहीं!

ऐसे कुलहीन गोत्रहीन वर्णहीन
वे महादेव शिव किसी का भी गोत्र
वर्ण कुल नहीं पूछते!

शिव भक्ति देखते हैं गोत्र वर्ण नहीं।
उनके लिए मर्म ही मूल है
कर्म ही कुल है!

वे राम नहीं
उनके लिए कोई पराया नहीं
उनके लिए कोई शूद्र नहीं
न कोई असुर न दैत्य न राक्षस
न ब्राह्मण न कोई पवित्र न कोई अशुद्ध
न कुछ अशुभ न कुछ अमंगल
न कोई उच्च न कोई क्षुद्र!

शिव के लिए न कोई स्त्री है कोई देवता
श कोई विधि न कोई विधाता!

शिव को देखो
शिव किसी तपस्यारत शंबूक की हत्या नहीं करते
शिव किसी को भी नहीं त्यागते
शिव किसी को भी शाप नहीं देते
शिव किसी को भी नहीं दुत्कारते
शिव किसी से नहीं मांगते!

शिव सिर्फ देते हैं
मुंह मांगा मन चाहा
तभी तो वे आशुतोष हैं
तभी तो वे शिव अवढरदानी हैं।

अपनी लंका दे दी रावण को
अपने त्रिशूल पर टिका लेते हैं काशी
गंगा को अपनी जटा में रख लेते हैं
अपनी काया बांट लेते हैं आधा
प्रिया पार्वती से
बन जाते हैं अर्धनारीश्वर
वे शिव तभी तो हैं महेश्वर!

शिव भोले हैं
नहीं अभिमानी हैं।
शिव गोत्र हीन हैं
शिव अकुलीन हैं अकुल हैं
कुलहीनो के नाथ हैं
तभी तो शिव विश्वनाथ हैं।

वे शिव विष पीकर संसार को देते हैं अमृतदान
और नीलकंठ बन जाते हैं
वे शिव अहंकारी त्रिपुरों के विनाश के लिए
त्रिपुरारी बन जाते हैं।

शिव कूटनीतिज्ञ कृष्ण नहीं
शिव दैत्यों के अरि विष्णु नहीं!

शिव कर्मयोगी हैं
गोत्रयोगी नहीं
वर्णयोगी नहीं।

शिव ने असुरों के गुरु शुक्राचार्य को संभव किया
दिया उनको संजीवनी का ज्ञान
असुरों को अमरता का सूत्र देते
वे न सकुचाए
गले में नाग की माला पहने
शरीर पर चिता की भस्म रमाए
वे बेघर भोलेभंडारी बाबा शिव
मूर्ख लोभी भस्मासुरों की समझ में कब आए?

अकबर ने प्रयाग का नाम बदला तो तुलसीदास और मध्यकालीन भक्त कवि मौन क्यों हैं?

हिंदी की मध्यकालीन कविता जिसे भक्ति काव्य के रूप में जाना जाता है। इसका चरम उत्कर्ष अकबरी शासन के 50-55 सालों में ही हुआ। तुलसीदास, सूरदास, मीरा, ये सब अकबर के समकालीन हैं और उसके साम्राज्य में निवास करते रचनारत रहे। और यही काल रामकाव्य का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ रामचरितमानस के प्रणयन और कृष्ण की बाललीला के गायन का भी है। मीरा के कृष्ण दीवानी होने का समय भी यही है। यह सब केवल संयोग नहीं।

इन कवियो के साथ ही एक पूरा समूह भक्ति कविता लिख रहा था। जहाँ श्रृंगार की कविता भी भक्ति की ओट में रची जा रही थी। इतिहास गवाह है कि किसी मुसलमान ने नहीं तुलसीदास का जीवन काशी के संस्कृत भक्त पंडो ने त्रस्त कर रखा था। वे अपनी रामकथा अवधी में लिख रहे थे। इस बात से पंडे और पोंगा तत्व परेशान थे। तुलसीदास का कहीं ठहर पाना कठिन था।

मीराबाई को विष राणा जी किस खुशी में पिला रहे थे यह संसार जानता है। अकबर और मुगल राणा पर दबाव डाल रहे थे क्या कि विधवा बहू को विष दे दो। इस मीरा को भक्तो की संगति से अलग करो। मुगल या मुसलमान तो मीरा की भक्ति के विरोध में नहीं थे। मीरा को राजपूतो की भूमि से भागकर वृंदावन और फिर द्वारका की ओर खिसक जाने के पीछे अकबर नहीं था। मीराबाई को "मीरा रांड" जैसा अपमान जनक संबोधन अकबर ने नहीं उसके सगे लोगों ने ही दिया था। मीरा को उसकी भक्ति के पुरस्कार में यही तिरस्कार जनक संबोधन दिया गया है।

मीरा खुद को विष दिए जाने, भक्ति से रोके जाने की बात अपने पदो में लिखती है। तुलसी भी काशी के पंडो से मिली परेशानी पर बोलते हैं । तो अब सवाल यह है कि जो तुलसीदास यह कहते संकोच नहीं करते कि " मांग के खाइबो मसीत में सोइबो, लेबो को एक न देबो को दोऊ" वे अकबर के द्वारा प्रयाग के नाम परिवर्तन पर चुप क्यों हैं। "को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ" की बात कहनेवाले तुलसीदास कहीं नहीं बोलते कि शासक उनके प्रयाग का नाम बदल रहा है। क्या प्रयाग का नाम बदलने से तुलसी को तनिक व्यथा न हुई होगी?। चित्तौड़ की बागी विद्रोहिणी मीरा भी इस पर मौन रहती है। क्या प्रयाग उसका तीर्थराज नहीं। वृंदावन का सूरदास चुप रहता है। क्या उसे प्रयाग से सरोकार नहीं? कड़ा मानिकपुर में बैठा भक्त मलूकदास चुप रहता है। क्या वह दुखी न हुआ होगा? या इन सबको अकबरी दरबार से वजीफा मिल गया था? क्या सभी भक्त कवि अपना दाम लगाकर दरबारी हो गए थे? किसी के पास उत्तर हो तो दे!

क्या तुलसी राम के सरनाम गुलाम अकबर से घूस लेकर प्रयाग नाम परिवर्तन पर अपनी कलम और जबान कटवा दिए थे। और वह कुंभनदास जो सत्ता को चुनौती देते हुए तत्कालीन राजधानी फतेहपुर सीकरी न जाने की खुली घोषणा करता है। "संतन कौ कहां सीकरी सो काम" वह भी प्रयाग के नाम परिवर्तन पर मूक मौन है! ऐसा इसलिए है क्योंकि अकबर ने नाम नहीं बदला था बल्कि एक नव निर्माण किया था।

और किसी की भक्ति और धर्म के मामले में अकबरी सरकार की ओर से कोई बाधा न थी। अकबर ने शासन के आरंभिक वर्षो में ही पराजितो पर अपने धर्म में बने रहने के लिए दिए जाने वाले जजिया कर को समाप्त कर दिया था। आगे चलकर अकबर अपनी मां हमीदा बजगम की मौत पर उनका श्राद्ध करता है। अपना मुंडन कराता है। और तर्पण भी करता है। और तो और आगे चलकर मुगल शाहजादो को खतना कराने से भी बरी कर दिया गया था। इस बात के संदर्भ और उल्लेख भी इतिहास ग्रंथो में मिलते हैं। इसपर भी इतिहासकारो को अपना मत देना चाहिए। यह मुगलो का जो भारतीयकरण है, यह एक बड़ा कदम था। जिसे समझने और संगमन के लिए एक बड़े निर्णय के रूप में देखना होगा।

जब बादशाह या सम्राट अपने धर्म के विरोधवाली बहुसंख्यक प्रजा के पक्ष में राजकोष पर लगभग 12 से 14 लाख का घाटा सहते हुए जजिया को खत्म कर रहा हो, हिंदू तीर्थयात्रियों पर लगनेवाले "तीर्थकर" को हटा रहा हो, सनातनी पद्धति से अपनी मां का श्राद्ध कर्म कर रहा हो, मैं नहीं मानता कि वह एक अनुपम तीर्थ स्थल का नाम बदलने की सोच भी सकता है।

और अगर अकबर ने ऐसा किया होता तो मैं यह स्वीकार नहीं करता कि हमारे स्वातंत्र्य चेता तुलसीदास, मीरा, सूर, रहीम, रसखान इस मुद्दे पर गूंगे बने रहते। बिना कुछ संकेत किए चुप रहते। अगर तुलसीदास अपने समय के अकाल पर विस्तार से लिखते हैं तो इस तीर्थ राज प्रयाग के नामांतर पर भी बोलते। हमारे सभी पूर्वज कवि भीरु समझौता वादी और बिकाऊ नहीं थे।

आज के शासक भरपूर "तीर्थकर" वसूल कर रहे हैं। प्रयाग के कुंभ मेले के लिए अलग से तीर्थ यात्रियो पर तीर्थकर लगाया है भक्तो की सरकार ने। साथ ही इलाहाबाद की उस प्रजा पर भी बढ़ा कर टैक्स लगाया गया है जो स्थाई और स्थानीय निवासी हैं।

प्रजा का ध्यान रखना एक प्रतापी कार्य होता है। वह केवल प्रवचन और भाषण से संभव नहीं। अकबर एक प्रजावत्सल सम्राट था। यह मानने न मानने के ऊपर की बात है। अपने आरंभिक शासनकाल में उसने कुछ अराजकतावादी कदम उठाए हैं। लेकिन तब वह स्वायत्त शासक नहीं बन पाया था। एक 13 साल के बालक राजा के द्वारा सम्पन्न नीतियो के लिए अकबर के आगे के 50 साल के सुवर्ण और परिवर्तनकारी शासन को रद्दी की टोकरी में नहीं डाला जा सकता।

- बोधिसत्व, मुंबई

व्यंग्य / मोदी परिघटना को समझिए

एक आदमी लाखों रुपए के सूट-बूट पहनकर कहता है कि मैं ग़रीब हूं और हम उसे ग़रीब मान लेते हैं..

सीबीआई, एनआईए, एसपीजी, आईबी जैसी एजेंसियां जिस आदमी के हाथों की कठपुतली हैं वो आदमी कह रहा है कि "मुझे सताया जा रहा है" और हम मान लेते हैं..

जो संसद मे पूर्ण बहुमत में है, राष्ट्रपति समेत 20 से ज्यादा राज्यों में सरकार है, वो कहता है "मुझे काम नहीं करने दिया जा रहा" और हम मान लेते हैं..

जो आदमी भ्रष्टाचार करके जेल में रह चुके लोगों को टिकट देता है, कार्पोरेट दलालों को रक्षा सौदे दिलाता, फिर कहता है "मैं भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ रहा हूं" और हम मान लेते हैं..

जिसके शासन में सबसे ज्यादा सैनिक शहीद हुए हैं वो कहता है "दुश्मन हमसे कांप रहा है" और हम मान लेते हैं..

जिसके समय में सबसे ज्यादा किसानों ने आत्महत्या की है और वो कहता है "हमने किसानों की आय दोगुनी कर दी है" और हम मान लेते हैं..

जिसके समय में पढ़े-लिखे नौजवानों को पकौड़ा तलने के लिए और बैंक के बड़े कर्ज़दारों को भगोड़ा बनने को कहा जाता है और हम उसे विकास मान लेते हैं..

जिसके राज में सबसे ज्यादा बलात्कार हो रहे हैं और वो कहता है हम "बेटी बचाओ अभियान" चला रहे हैं और हम मान लेते हैं..

जो सुंदर भविष्य का सपना दिखाकर सत्ता में आया हो और 400 साल पहले के भूतकाल में हमें घुमा रहा हो और फिर भी हम उसकी बातों में आकर खुश हैं..

-साइबर नज़र

व्यंग्य

नेहरू और गाँधी ने हड़प लिया सारा श्रेय

क्या है पूरा मामला ? कैसे नेहरू और गाँधी ने हड़प लिया स्वतन्त्रता आंदोलन ? बात दरसल तब की है जब पूरा देश आज़ादी की जंग लड़ रहा था और सभी देशभक्त अंग्रेजो को भगाने की बात कर रहे थे। कोई भी देशभक्त अंग्रेजो की मुखबिरी नही कर रहा था। अंग्रेजो के खिलाफ आंदोलनों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने वालो की तस्वीरें ली जाती और इतिहासकारों द्वारा उनका इंटरव्यू भी लिया जाता। नेहरू और गांधी इस बात को समझ चुके थे अगर उन्हें इतिहास में नाम दर्ज करवाना है तो बहुत सारे फोटो खिंचवाने होंगे। जब भी गाँधी और नेहरू को कोई भी केमरा दिखता वो उसके सामने खड़े हो जाते और तस्वीर के छपते ही मशहूर हो जाते।

लेकिन वो आंदोलनों में कोई काम नही करते केवल तस्वीर खिंचवाते। उस वक़्त देशभर में आंदोलन की ज़िम्मेदारी एक छोटे से बुद्धिमान और करिश्माई बच्चे ने संभाल रखी थी जो सिर्फ 4 साल का था और उसका नाम था नरेंद्र। वह घर घर जाकर लोगो को अपनी सभाओं में ले आता, और घण्टो तक बिना पढ़े कुछ भी बोला करता, जब भी लाठियां खाने की बारी होती तो चौराहे पर आ जाता। नेहरू गाँधी को इस से काफी डर लग रहा था कि कहीं यह लड़का इस आंदोलन का नायक न बन जाये। इसलिये उन्होंने एक षड्यंत्र के तहत नरेंद्र को आंदोलन से हटाना शुरू किया।

जब भी कोई इतिहासकार (The History Spoofs) आंदोलनकर्ताओं की तस्वीर खींचने आते तो नेहरू नरेंद्र को चाय लाने भेज देता और खुद ही अपनी तस्वीर और इंटरव्यू करवा लेता। इसी के कारण आज इतिहास की हर पुस्तक में केवल नेहरू गाँधी का ही नाम है और नरेंद्र गायब है। बहुत मुश्किल से एक तस्वीर मिल पायी है इतिहास के पन्नो में।

जब तक नरेंद्र को यह षड्यंत्र समझ आया तब तक देर हो चुकी थी और उसने यह निश्चय कर लिया कि अब से वह एक कैमरा नही छोड़ेगा और हर जगह तस्वीर खिचवायेगा और चाय कभी नही लाएगा। भाइयो और लड़कियों क्या हमारा फ़र्ज़ नही है कि हम इस सच को दुनिया भर में पहुंचाए ? क्या हमारा कर्तव्य नही कि हम आनेवाली पीढ़ियों को सच्चा इतिहास बताए ? भाइयो यह बात ब्रिटेन के इतिहासकारों तक पहुंच जाए। जय माँ भारती, जय हिंद।

- साइबर नजर